15

आत्मा यीशु की महिमा कैसे करता है

(यूहन्ना 16)

''वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा, जो कुछ पिता का है, वह सब मेरा है; इसलिए मैं ने कहा, कि वह मेरी बातें में से लेकर तुम्हें बताएगा'' (आयतें 14, 15)।

अपने प्रेरितों के साथ अटारी वाले कमरे में हुई बातचीत में यीशु ने अपने चले जाने के थोड़ी देर बाद अपने प्रेरितों के पास पवित्र आत्मा को भेजने की प्रतिज्ञा दी। यूहन्ना 16 इस बात का संकेत देता है कि उनके साथ आत्मा की उपस्थिति तीन मुख्य कामों को पूरा करने के लिए है। पहला उसने संसार को यीशु की सेवकाई और जीवन के विषय में निरुत्तर करना था (आयतें 8-11)। दूसरा उसने प्रेरितों द्वारा विश्व में सुसमाचार ले जाने के लिए आवश्यक अगुआई देनी थी (आयत 13)। तीसरा, उसने यीशु की महिमा करनी थी (आयतें 14, 15)।

''महिमा'' शब्द का अर्थ यीशु की स्वाभाविक भलाई, ईश्वरीयता और उद्धार दिलाने वाले स्वभाव को दिखाना है। आत्मा के इस प्रकाशन से परोक्ष रूप में मसीह की प्रशंसा, तारीफ़ और महिमा होनी थी। आत्मा को अपनी महिमा कराने के लिए नहीं भेजा जा रहा था बल्कि प्रेरितों और संसार का ध्यान मसीह और उस उद्धार की ओर ले जाने के लिए भेजा जा रहा था जिसे वह संसार में ला रहा था।

चर्चा के इस भाग में (आयतें 14, 15) यीशु ने अपने प्रेरितों को बताया कि आत्मा ने उसकी महिमा कैसे करनी थी।

उसका ज़ोर

यीशु ने यह कहते हुए आरम्भ किया कि आत्मा अपने प्रकाशन के ज़ोर के द्वारा उसकी महिमा करेगा। यीशु ने कहा, ''क्योंकि वह मेरी बातों से लेकर तुम्हें बताएगा ...।'' जो कुछ मसीह ने किया था अर्थात उसकी शिक्षा, सेवकाई, मृत्यु और पुनरुत्थान को लेकर आत्मा ने मसीह के द्वारा उपलब्ध करवाए गए उद्धार को और इनकी व्याख्या को लागू करके इन सब के महत्व को बताना था।

यीशु के चेलों को बाद में ''*मसीह*-ी कहलाना था'' (देखें प्रेरितों 11:26)। परमेश्वर ने मसीह को संसार में अपनी सनातन मंशा में अगुआई के लिए भेजा। यीशु ने आकर मरने तक पिता की आज्ञा का पालन किया। इस कारण उसे अति ऊंचा किया और मसीही युग का ''प्रभु'' बना दिया गया। पौलुस ने लिखा:

इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है। कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे हैं; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें। और परमेश्वर पिता की महिमा के लिए हर एक जीभी अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है (फिलिप्पियों 2:9-11)।

अपनी प्रेरणा के द्वारा पवित्र आत्मा ने उस सब के अनन्त महत्व की घोषणा करनी थी जो यीशु ने किया। आत्मा का ज़ोर यीशु के सदा तक रहने वाले काम पर होना था।

उसकी व्याख्या

इसके अलावा यीशु ने कहा कि आत्मा उस सब की व्याख्याएं देकर जो उसने किया था उसकी महिमा करेगा। यीशु के शब्द थे ''*क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा*'' (16:14)। यीशु के चले जाने के समय तक भी प्रेरितों को पक्का पता नहीं था कि उसका मिशन और राज्य कैसा होगा। उन्हें उनका पता तो था और उन्होंने यीशु से उसकी बातें सुनी थीं, पर उसकी योजनाओं की उनकी समझ बिल्कुल खाली थी जिसे आत्मा ही उभारकर सुधार सकता था। शायद उसके ऊपर उठाए जाने के गवाह बनने के मार्ग तक भी वे अभी तक पूछ रहे थे कि उसका राज्य कैसा होगा (प्रेरितों 1:7, 8)। उन्हें प्रकाशन देकर और वे बातें याद दिलाकर जो यीशु ने उन से कहीं थीं, आत्मा ने इन मामलों में उन्हें गहरी समझ ''बतानी'' थी। ''बताना'' शब्द यूनानी भाषा के शब्द (*anangello*) से निकला है जिसमें विवरण की घोषणा करने का सूक्ष्म भेद है।

पवित्र आत्मा ने सब सत्य का मार्ग बताने और उन्हें वे बातें याद दिलाने के लिए जो पहले उन्होंने सुनी थी उनका सहायक (14:26) बनना था। उसने मसीह की सेवकाई को वह मुख्य स्थान देना था जो प्रेरितों के जीवनों और परमेश्वर की व्याख्या में होना चाहिए था।

उसका ऊंचा उठाया जाना

आत्मा ने यीशु को ऊंचा उठाकर उसकी महिमा करनी थी। यीशु ने प्रेरितों को ध्यान दिलाया, ''जो कुछ पिता का है, वह सब मेरा है; इसलिए मैं ने कहा, कि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा'' (16:15)। एक अर्थ में अपनी योजना का केन्द्र बनकर यीशु को पिता की पूर्ण इच्छा को लागू करने के लिए भेजा गया था। यीशु में ''परमेश्वर की सारी भरपूरी'' वास कर रही थी (इफिसियों 3:19)। उसमें लोगों को ''परिपूर्ण किया'' जा सकता था। उसने सारे अधिकार और शासन पर स्थिर होना था (कुलुस्सियों 2:10)। यीशु पृथ्वी पर पूरे परमेश्वरत्व के प्रति सम्पूर्ण और पूर्णता के रूप में आया: ''क्योंकि उसमें ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है'' (कुलुस्सियों 2:9)।

यीशु ने वही सिखाया और किया था जो उसे पिता ने बताया था। जिन्होंने यीशु को निकट से और समझदारी से देखा था उन्होंने पिता को देख लिया था (यूहन्ना 14:9), और वे यह समझ पाए थे कि अपनी सेवकाई में यीशु जो कुछ कर रहा था वह उसे भेजने के पिता का ईश्वरीय कारण था। एक शारीरिक देह को धारण करने से यीशु मानवीय स्थिति में आने और अपने पिता की इच्छा को पूरा करने के योग्य हुआ (इब्रानियों 10:7)।

सारांश

यह ज़ोर देकर कि यीशु ने जो कुछ किया और उस सब को स्पष्ट करते हुए जो प्रभु ने पृथ्वी पर रहते समय किया और कहा, पवित्र आत्मा ने यीशु को महिमा देनी थी। उसने उद्देश्यों और योजनाओं के सम्बन्ध में पिता और पुत्र के बीच एकता को समझाते हुए मसीह को ऊंचा करना था।

''और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य-अन्य भाषा बोलने लगे।

''और आकाश के नीचे की हर एक जाति में से भक्त यहूदी यरूशलेम में रहते थे। जब वह शब्द हुआ तो भीड़ लग गई और लोग घबरा गए, क्योंकि हर एक को यही सुनाई देता था, कि ये मेरी भाषा में बोल रहे हैं'' (प्रेरितों 2:4-6)।

''सो अब इस्राएल का सारा घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी'' (प्रेरितों 2:36)।